आर्यों का मूल निवास

9

मदन मोहन जोशी*

वर्तमान तक ज्ञात तथ्यों के आधार पर यह कहा जाता है कि द्वितीय सहस्राब्दी ईसा पूर्व के मध्य में भारत में एक नवीन जाति या कबीले का अस्तित्व मिलता है। कुछ विद्वान इन्हें आक्रमणकारी मानते हैं और बाहर से आया बताते हैं,ये अपने को आर्य कहते थे। अंग्रेजी भाषा में आर्य शब्द का सामान्य अर्थ आर्यन्स है, बाशम के अनुसार फारस के प्राचीन निवासी भी इस नाम का प्रयोग करते थे और वर्तमान ईरान शब्द में तो यह शब्द अब भी विद्यमान है (बाशमः1972)।

'आर्य' शब्द संस्कृत भाषा का है जिसका अर्थ है 'उच्च', 'उत्तम' अथवा 'श्रेष्ठ'। सम्भवतः अपनी उच्च जातीयता, उच्चतम कर्म और श्रेष्ठता प्रदर्शित करने हेतु इस जाति ने अपने को 'आर्य' नाम से विभूषित किया। अपनी विरोधी जाति को उन्होंने 'अनार्य', 'दस्यु' अथवा 'दास' कहकर सम्बोधित किया जिसकी पुष्टि ऋग्वेद में दिए गए 'अकर्मन', 'अब्रह्मन्', 'अव्रत', 'अदेवयु' जैसे शब्दों से होती है। अपनी शारीरिक रचना तथा मानसिक एवं बौद्धिक गुणों से वशीभूत होकर ही वे अनार्यो से अपने को श्रेष्ठ समझते थे। उनके आचार–विचार विकसित और उन्नत थे। ऐसा लगता है कि पहले उन्हें उत्तर भारत में द्रविड़ों से संघर्ष करना पड़ा। प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप के अनेक ऋग्वैदिक वर्णन संघर्षों की पुष्टि भी करते हैं। द्रविड़ पराजित होने के पश्चात दक्षिण की ओर चले गए। इस तरह द्रविड़ सभ्यता तथा सिन्धु घाटी के ध्वासावशेषों पर आर्य सभ्यता ने पनपना शुरू कर दिया। बाद में इन आर्यों का भारतीयकरण हो गया और उन्हें भारतीय आर्य की संज्ञा प्राप्त हुई।

19वीं सदी में नृविज्ञान के आधार पर आर्य जाति को कॉकेशियाई उपवर्ग में रखकर उन लोगों से संबंधित करने का प्रयास किया गया जो मूल आद्य–भारोपीय से निसृत भारोपीय भाषायें बोलते हैं और वर्तमान में यूरोप, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, आंग्ल–अमेरिका, लैटिन अमेरिका,रूस, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका ,उत्तरी भारत ,पाकिस्तान ,ईरान ,आर्मेनिया ,मालदीव, बांग्ला देश, अफगानिस्तान, ताजिकिस्तान तथा नैपाल में रहते हैं (Rand McNally 1944: 278–279)। 19वीं और 20वीं सदी के प्रारंभ तक आर्य शब्द आद्य–भारोपीय भाषा के प्रारंभिक प्रयोक्ता और उनके वंशजों के लिए प्रयुक्त किया जाता था 1861 में मैक्स मूलर ने सर्वप्रथम आर्य जाति का प्रयोग किया। काकेशियाई प्रजाति का आर्य, सेमाइट और हेमाइट वर्गीकरण

* *सहायक अध्यापक, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी*

भाषायी आधार पर है ना कि शारीरिक नृविज्ञान के आधार पर। शारीरिक नृविज्ञान में इन्हें नॉर्डिक,अल्पाइन तथा भूमध्य सागरीय कहा जाता है।

19वीं सदी के मध्य यह सामान्य रूप से समझा जाने लगा कि आर्यों का उद्भव दक्षिण–पश्चिमी स्टेपीज़ में हुआ, हांलाकि सदी के अंत तक इस विचार धारा को चुनौती दी गयी और यह कहा गया कि आर्यों का उद्भव प्राचीन जर्मनी या स्कैण्डिनेविया में हुआ था। यह कहा गया कि आद्य–भारोपीय लोग,नवाष्मयुगीन जर्मनी के रज्जु भाण्ड संस्कृति के लोगों से समानता रखते थे (Stefan Arvidsson :2006)।

डॉ0 अविनाष दास एवं सम्पूर्णानन्द के अनुसार आर्यों का आदि देश सप्तसैन्धव था(Das, A.C. :2010)। इस प्रदेश में सिन्धु, वितस्ता, अस्किनी, परूष्णी, विपाशा, शतुद्रि और सरस्वती नामक सात नदियां बहती थीं। इन्हीं के द्वारा सींचा गया उर्वर प्रदेश, प्राचीन युग में सप्तसैन्धव के नाम से जाना जाता था और यही प्रदेश आर्यों का आदि देश था। महामहोपाध्याय पं गंगानाथ झा के अनुसार आर्यों का आदि देश भारत का मध्यदेश है। उनके अनुसार मूल आर्य मध्यदेश में निवास करते थे और कालान्तर में जब उन्हें अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता हुई तो वे पश्चिमी एशिया तथा मध्य एशिया आदि स्थानों में फैल गए। एल0डी0 कल्ल ने यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है कि आर्य मूल रूप से कश्मीर तथा हिमालय के प्रदेशों में रहते थे। डी0एस0 त्रिवेदी मुल्तान में स्थित देविका नदी के समीपवर्ती प्रदेश को आर्यों का निवास स्थान मानते हैं। डॉ0 के0एम0 मुंशी ने आर्यों का आदि देश गुजरात माना है(Munshi,K.M: 1944)।

परन्तु भारतवर्ष को आर्यों का आदि देश मानने में निम्नलिखित कठिनाइयां हैं–

यदि आर्यों का आदि देश भारत होता तो वे अपने देश का पूर्णरूपेण आर्यीकरण करते तब दूसरे देशों को जाते। परन्तु ऋग्वेद से स्पष्ट सूचना मिलती है कि तत्कालीन आर्य मध्य प्रदेश, पूर्वी भारत तथा दक्षिणापथ से प्रायः अपरिचित थे जबकि ईरान और अफगानिस्तान के सन्दर्भ में उनका भौगोलिक ज्ञान अपेक्षाकृत ज्यादा था। इससे प्रतीत होता है कि वे बाहर से आये थे और ऋग्वैदिक काल तक वे पंजाब के प्रदेश से आगे के भारत में प्रविष्ट नहीं हुए थे। इण्डो–यूरोपियन परिवार की प्राचीनतम भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से हमें जिन वनस्पतियों और पशु–पक्षियों का पता चलता है वे सब भारत में नहीं पायी जाती। इससे यह निष्कर्ष निकालना स्वाभाविक है कि आर्य भारत के मूल निवासी नहीं थे। बलूचिस्तान में द्रविड़ भाषा के प्रचलन से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत के अधिकांश भागों में

आर्य भाषा का प्रचलन नहीं था। इस आधार पर भी भारत को आर्यों का आदि देश नहीं माना जा सकता है।

श्री बालगंगाधर तिलक (Tilak,B.G:2011) ने ऋग्वैदिक विवरण की व्याख्या में लम्बी अवधि प्रायः 6 माह के रात और दिन का अनुमान लगाकर उत्तरी ध्रुव प्रदेश या आर्कटिक प्रदेश को आर्यों का निवास बताया है जहाँ से हिम प्रलय के कारण वे हटकर भारत आये थे। श्री तिलक के मतानुसार ईरानी अवेस्ता में उत्तरी ध्रुव के संकेत मिलते हैं और भीषण तुषारापात का वर्णन भी मिलता है। आर्यों द्वारा वर्णित वनस्पति और उनकी औषधियां उत्तरी ध्रुव में प्राप्त होती हैं। परन्तु इस सिद्धान्त को मानने में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि– सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में कहीं भी उत्तरी ध्रुव को आर्यों की भूमि नहीं कहा गया है और यदि आर्य उत्तरी ध्रुव को अपना आदि देश मानते तो सप्तसैंधव को 'देवकृत योनि' न कहते।

यूरोप को आर्यों का आदि देश स्वीकार करने वाले विद्वानों में डॉ0 पी0गाइल्स प्रमुख हैं (Giles,P.1996 :135) जिन्होंने भाषा विज्ञान के आधार पर हंगरी को उनका आदि देश माना है। यहाँ से वे एशिया माइनर और ईरान होकर भारत पहुंचे। परन्तु भाषा विज्ञान के आधार पर उनका यह मत उचित प्रतीत नहीं होता। कुछ विद्वानों ने भूरे बालों के आधार पर भी जर्मन प्रदेश को आर्यों का आदि देष स्वीकार किया है। यह विशेषता आज भी जर्मन जाति में पायी जाती है। कुछ पूर्वेतिहासिक मृद्भाण्ड मध्य जर्मनी से मिले हैं। इस आधार पर भी मध्य जर्मनी को भी कुछ विद्वानों द्वारा आर्यों का आदि देश स्वीकार किया है। पेन्का नामक विद्वान् की धारणा है कि भूरे बालों के अतिरिक्त प्राचीनतम आर्यों की जो अन्य शारीरिक विशेषतायें थीं वे जर्मन प्रदेश के निवासियों यानि स्कैण्डिनेवियन्स में पायी जाती हैं। अतः स्कैण्डीनेविया को ही आर्यों का आदि देश स्वीकार किया जाना चाहिए। हर्ट महोदय भी इस मत को स्वीकार करने के पक्ष में हैं। इसके अलावा त्रेपोल्जे ने यूक्रेन से प्राप्त कुछ मृद्भाण्डों का अध्ययन करके इन्हें आर्यों से सम्बन्धित बताया है। पोकोर्नी का कहना है कि जिस उपजाऊ भूमि का वर्णन ऋग्वेद में है वह बेजर और विश्चुला नदियों के बीच स्थित श्वेत रूस तक फैला था। इसे स्टेप्स का मैदान कहा जाता है जो आर्यों का आदि देश माना जा सकता है। परन्तु यूरोपीय सिद्धान्त को स्वीकार करने में निम्नलिखित कठिनाइयां हमारे सामने आती हैं–

1. केवल शारीरिक विशेषताओं के आधार पर किसी जाति को आर्यों का वंशज कहना उचित प्रतीत नहीं होता है।

2. जहाँ तक भूरे बालों का प्रश्न है, प्रसिद्ध भाष्यकार पतंजलि ने भूरे बालों को ब्राह्मणों का गुण बताया है। इस आधार पर तो आर्यों को भारत का ही मूल निवासी

क्यों नहीं कहा जा सकता?

3. मृद्भाण्डों को आधार मानकर आर्यों का आदि देश स्वीकार करना भी तर्कसंगत नहीं है। क्योंकि इस तरह के मृदभाण्ड अन्य स्थानों से भी प्राप्त हुए हैं।

अनेक विद्वानों ने विभिन्न तर्कों का आधार लेकर एशिया को आर्यों का आदि देश स्वीकार करने की वकालत की है। उनके अनुसार आर्यों के प्राप्त दो आदि ग्रन्थ ऋग्वेद और जैन्द–अवेस्ता यहीं से प्राप्त हुए हैं। अतः यहीं कहीं आस–पास ही वे निवास करते होंगे। आर्यों का प्राचीनतम लेख भी यहीं के बोगजकोई (1400 ई0पू0) नामक स्थान से प्राप्त हुआ है जिसमें एक,तेर, पंज, सत्त आदि अंकों का उल्लेख है जो वैदिक संख्याओं के ही अनुरूप हैं। इसी तरह मिस्र में टेल एल–अर्मना नामक स्थान पर कुछ मिट्टी के खण्ड प्राप्त हुए हैं जो बेबीलोनिया की लिपि में लिखित हैं और इन पर कुछ बेबीलोनिया के नरेशों के नाम हैं। ये नाम बहुत कुछ वैदिक प्रतीत होते हैं। प्रश्न यह उठता है कि एशिया के किस भाग में आर्यों का आदि स्थान था– इस पर अलग–अलग विद्वानों की अलग–अलग धारणायें हैं। मैक्समूलर ने मध्य एशिया को आर्यों का आदि देश स्वीकार करते हुए इस बात पर प्रकाश डाला है कि यहीं से ये विभिन्न शाखाओं में विभाजित होकर ईरान और भारत गये। जे0जी0 रोड एवं पॉट का मानना है कि आर्य मूल रूप से बैक्ट्रिया के निवासी थे जहॉ से वे विभिन्न दिशाओं में गए थे। यह मत अवेस्ता को आधार मानकर प्रतिपादित किया गया है। इसी प्रकार प्रो0 सेअस ने कैस्पियन सागर का समीपस्थ प्रदेश आर्यों का आदि देश स्वीकार किया है। उनका तर्क है कि वे शीत जल और वनस्पति प्रधान स्थानों पर रहते थे जिसकी पुष्टि ऋग्वेद और अवेस्ता के अनेक प्रसंगों से होती है। एडवर्ड मेयर पामीर पठार और ब्रैण्डेस्टोन एशिया में यूराल पर्वत के दक्षिण में स्थित स्टेप्स प्रदेश को आर्यों का आदि प्रदेश स्वीकार करते हैं। परन्तु मध्य एशिया को आर्यों का देश स्वीकार करने में निम्नलिखित कठिनाइयां हैं–

1. मध्य एशिया के निवासियों में आर्यों के गुण उपलब्ध नहीं होते हैं। यदि आर्यों का आदि स्थान यहॉ पर था तो यहॉ की आधुनिक जातियों में उनके वंशज आर्यों का प्रभाव क्यों नहीं पाया जाता।

2. आर्य कृषि कर्म करते थे परन्तु मध्य एशिया में कृषि कर्म हेतु उपजाऊ तथा उर्वरक प्रदेश नहीं थे। अतः जल की कमी तथा अनुपजाऊ वाले प्रदेश को आर्यों का आदि देश स्वीकार करना कठिन है।

हिन्द–यूरोपीय भाषा, आर्य संस्कृति की सर्वप्रमुख विशेषता मानी जाती है। भाषाशास्त्रीयों ने आद्य हिन्द–यूरोपीय भाशा का प्रारंभ सातवीं या छठी सहस्राब्दी ईसा पूर्व अर्थात आज से 8–9 हजार वर्ष पूर्व बतलाया है। हिन्द–यूरोपीय भाषा का

की दो शाखाऐं थीं– एक पूर्वी शाखा और दूसरी पश्चिमी शाखा। भाशाशास्त्रियों के अनुसार पूर्वी हिन्द–यूरोपीय भाशा शाखा के उच्चारण संबंधी विकास में पांचवी सहस्राब्दी के मध्य में अनेक चरण देखने को मिलते हैं। ऐसी ही एक भाषा संभवतः आद्य हिन्द–ईरानी भाषा थी। डॉ. आर.एस. शर्मा बतलाते हैं कि इसमें हिन्द–आर्य भाषा भी शामिल थी और इस भाषा के प्राचीनतम प्रमाण इराक के अगेड वंश के पाटिया पर लिखे मिलते हैं जिनका समय 2300 ईसा पूर्व है। डॉ शर्मा आगे बताते हैं कि इस अभिलेख में अरिसेन और सोमसेन नामक व्यक्तियों के नाम मिलते हैं। इसी प्रकार हिट्टाइट अभिलेख से जो साक्ष्य मिले हैं उसके आधार पर कहा जा सकता है कि इस स्थान पर हिन्द–यूरोपीय भाषा की पश्चिमी शाखा के बोलने वाले वहां 19वीं सदी से 17वीं सदी ईसा पूर्व में विद्यमान थे। इसी प्रकार डॉ. शर्मा बतलाते हैं कि मेसापोटामिया में कैस्साइट और मिटानी शासकों के बोगजकोई अभिलेखों से पता चलता है कि 16वीं से 14वीं सदी ईसा पूर्व में इस भाषा की पूर्वी शाखा के बोलने वाले विद्यमान थे। डॉ. शर्मा का विचार है कि हिन्द–ईरानी भाषा का विकास पश्चिम में फिनलैण्ड और पूरब में कॉकेशस क्षेत्र के बीच कहीं था।

गॉर्डन चाइल्ड ने इण्डो–आर्यों के उद्‌गम पर प्रकाश डालते हुए अनातोलिया को इण्डो–यूरोपीयों का मूल निवास स्थान बतलाया (Childe: 1928)। कुछ अन्य पुराविद्–सह–भाषाशास्त्रियों ने भी इस मत का समर्थन करते हुए इण्डो–यूरोपीय भाषा का मूल स्थान कॉकेशस के दक्षिण क्षेत्र अर्थात पूर्वी अनातोलिया और उत्तरी मेसोपोटामिया क्षेत्र को माना है। रेनफ्रू नामक पुराविद् भी पूर्वी अनातोलिया को आर्यों का मूल निवास स्थान मानते हैं।

इस संबंध में डॉ. आर.एस.शर्मा रोचक तथ्य रखते हुए बताते हैं कि जीवन विज्ञानियों की हाल के शोध कार्य मध्य एशिया से मानव प्रसरण पर सम्यक पेकाश डालते हैं। मानव की रक्त कोशिकाओं में जो उत्पत्ति संबंधी संकेत (डी.एन.ए.)होते हैं वे मानव पीढ़ियों में सदैव रहते हैं। जीवन–वैज्ञानिकों के अनुसार इस तरह के कुछ विशेष संकेत मध्य एशिया के एक छोर से दूसरी छोर तक 8000 इस्वी पूर्व के आसपास मिलते हैं। इन विषेश संकेतों का नाम एम 17 दिया गया है और ऐसे संकेत मध्य एषिया के 40 प्रतिशत से अधिक लोगों में मिलते हैं लेकिन ये संकेत द्रविढ़ भाशाभाशियों के केवल 10 प्रतिशत जनसंख्या में मिले हैं , इससे पता चलता है कि इण्डो–आर्य मध्य एशिया से भारत पहुंचे थे।

संदर्भ

1.ए.एल.बाशम : अद्‌भुत भारत, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी,आगरा,1972

2.Rand McNally's World Atlas International Edition Chicago: 1944 Rand McNally Map: "Races of Mankind" Pages 278–279

3.Arvidsson, Stefan (2006). Aryan Idols. USA: University of Chicago Press, 143

4.Das, A.C. ,2010: Rig-Vedic India, General Books, ISBN: 1152802100

5. Tilak,B.G.,2011: Arctic home in the Vedas,Arktos Media,ISBN-10:1907166343

6.Munshi,K.M 1944: The Glory that was Gurjardesa,part III: The Imperial Gurjars,Bombay

7. Giles,P.1996 : *Proceedings of the All-India Oriental Conference, Original from the University of Virginia,digitizes 19sep 2007,p.135*

8. *Gordon Childe. V: The Aryans: A Study of Indo-European Origins, Review by: J. Whatmough Vol. 4, No. 2 (Jun., 1928), pp. 130-135 Published by: Linguistic Society of America .*